॥ श्री ॥

प्रश्न कुतूहल

श्री स्वामी पंडित हरदयालुशर्मा विरचितः

भाषार्थ सहितः ।

यह अद्भुतप्रश्नविद्या का ग्रन्थ (प्रश्न कुतूहल) नाम
जिसको श्री स्वामी हरदयालु शर्माजी ने दीन
ब्राह्मणोंके उपकारार्थ छन्द तथा ज्योतिष वेद
स्वर न्याय वेदांत केवल आदि शास्त्रों
का मथन करके ईश्वर की कृपा से
नवीन युक्ति के साथ बनाया
और भाषा किया ।

जो इसको पढेगा वह बहुत द्रव्य पावेगा क्योंकि
इसमें मूक प्रश्न की बहुत सुगम रीति है ।

जिसको

[illegible] दत्त शर्मा की आज्ञानुसार
[illegible] किशनलाल ने
[illegible] बंबई भूषण' प्रेस मथुरा में छापकर
प्रकाशित किया ।

॥ श्री ॥

प्रश्न कुतूहल

श्रीस्वामी पंडित हरदयालुशर्मा विरचितः

भाषार्थ सहितः।

यह अद्भुतप्रश्नविद्या का ग्रन्थ (प्रश्न कुतूहल) नाम
जिसको श्री स्वामी हरदयालु शर्माजी ने दीन
ब्राह्मणोंके उपकारार्थ छन्द तथा ज्योतिष वेद
स्वर न्याय वेदांत केवल आदि शास्त्रों
का मथन करके ईश्वर की कृपा से
नवीन युक्ति के साथ बनाया
और भाषा किया।

जो इसको पढेगा वह बहुत द्रव्य पावेगा क्योंकि
इसमें मूक प्रश्न की बहुत सुगम रीति है।

जिसको

...दत्त शर्मा की आज्ञानुसार
...किशनलाल ने
अपने 'बंबई भूषण' प्रेस मथुरा में छापकर
प्रकाशित किया।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ प्रश्न कुतूहलो लिख्यते ।

मंगल के साथ (प्रश्न कुतूहल-प्रश्न विद्याका ग्रन्थ) लिखा जाता है ॥

अथ तपस्विनां भूदेवानां दीनगृहिणां निमित्तं द्रविण साधन ग्रन्थ शिव कृपया कुर्वे ।

भाषार्थः—अब तपस्वी दीन ब्राह्मणों के अर्थ नका साधन करने वाला ग्रन्थ शिवजी की कृपा से रते हैं ॥

॥ शार्दूल विक्रीडितं छन्द ॥

श्री साम्बं प्रणिपत्य कम्बु धवलं लम्बोदरं बुद्धिदं । भृङ्ग्याख्यं ह्यनुभृंगि कीर्ति बदनं नन्दीश्वरं कामदम्॥ दीनानां धनदं महेश कृपया ग्रन्थंकरोमी-हदं हृद्यं क्षेमकरं विचार्य्य मनसा सत्यं सतां श्रेयसे ॥ १ ॥

भाषार्थ-मैं शंख के सदृश शुक्ल वर्ण वाले श्री पार्वतीजी के सहित महादेवजी को और अष्ट सिद्धियों के दाता गणेशजी को तत् पश्चात् शृंगीगण और भृंगीगण तथा कीर्ति सुख और कामनाओं के देनेवाले नन्दीगण को प्रणाम करके महादेवजी की कृपा से मनोरथ का देने वाला क्षेमकारी मनोहर ग्रन्थ मनसे विचार के सज्जनों के कल्याण के लिये करता हूं ॥ २ ॥

शृण्वन्तु सर्वे संसारे द्रविणेन विना
किमपिकार्यंन सिद्ध्यति अतो वाङ्मयं
साधनं समाश्रित्य विद्वान् विहरेत्सर्वत्र

भाषार्थ—सब सुनों संसार में धनके विना कुछ भी काम सिद्ध नहीं होता इस लिये वाणी मय शास्त्र के साधन का सहारा लेकर विद्वान् सब स्थानों में विचरे ॥

तत्साधनन्तु वृत्तरत्नाकरस्य संज्ञा
ध्यायेविहितम् । तस्मादत्र लिख्यते ॥

भाषार्थ—वह साधन तो वृत्तरनाकर नाम छन्दो ग्रंथके संज्ञा अध्याय में है ॥ वहां से यहां लिखा जाता है ॥

॥ प्रश्न करण विधिः ॥

जब प्रश्न कर्ता आवे और बोले तब जैसे अक्षर

वह बोलें वैसेही एक सलेट पर वा स्याही से लिखले फिर उत्तर दाता प्रणव का उच्चारण कर प्रश्न कहने का आरम्भ करे जैसे किसीने कहा। मेरा प्रश्न आप कहिये। इस वाक्य में ॥ मगण जगण और सगण हैं इसका फल कहना गणोंको देखकर ॥ वह गणविधि आगे देखो ॥

म्यरस्त जभ्नगै र्लान्तैरे भिर्दशाभिरक्षरैः
समस्त वाङ्मयं व्याप्तं त्रिलोक्य मिव
विष्णुना ॥ १ ॥

अस्यायमर्थः ॥ यथा विष्णुना व्यापकेन परमेश्वरेण त्रैलोक्यं व्याप्तम् तथैव मगण यगण र, स, त, ज, भ, न, गुरु लघु भिर्दशभिरक्षरैः समस्त वाक्रूपं शास्त्रं व्याप्त मिति अतएतेषां दशानांविभागे नव प्रष्णकर्तुः प्रष्णस्योत्तरं वक्तव्य मिति ॥ कस्माच्च श्चैतन्य परमात्मास्ति तस्मादुद्भूत मिदंसर्व जगद्वर्त्तते तत्सत्यं, तस्मात्सत्यात्सत्य शब्दस्ये वोत्पत्तिर्भवति ॥ गणैश्च फलमिव ज्ञेयम् ॥

॥ गणों की पहचान ॥

भाषार्थ—इसका यह अर्थ है ॥ जैसे बिष्णु व्यापक परमेश्वर से तीनों लोक व्याप्तहैं वैसेही मगण, यगण, रगण तगण जगण भगण नगण गुरु और लघु ॥

इन दश अक्षरों से समस्त बाणी रूप शास्त्र व्याप्त है ॥ इस लिये इन दशों के विभाग सेही प्रश्न करने वाले के प्रश्न का उत्तर कहना चाहिये ॥ क्योंकि जो चैतन्य परमेश्वर है उसी से उत्पन्न हुआ सारा जगत् है और वहसत्य है उससत्य शब्द कीही उत्पत्ति होतीहै । गणों से फल जानना चाहिये ॥

तद्यथा । मोभूमिः श्रियमातनोति
यजलं वृद्धिं रवन्हिर्मृतिंजः सूर्यो रुजः
कादधाति बिपुलं भेन्दुर्यशो निर्म्मलं
सोवायुः परदेश दूरगमनं तव्योम शून्यं
फलम्र नोनाकः सुखमच्युतं प्रकुरुतेमाद्य
गणानां बुधाः ॥ ६ ॥

भावार्थ---इस तरह मगण का भूमि देवता है और यह लक्ष्मी का विस्तार करता है यगण का जलदेवताहै धन संतानादि की वृद्धि देने वाला है ॥ रगण का अग्नि देवता मृत्यु का दाता है जगण का सूर्य देवता और बहुत रोगका दाता है ॥ भगणका चन्द्रमा देवता है और निर्म्मल यशका दाता है ॥ सगण का वायु देवता और परदेश गमन का दाता है । तगण का आकाश देवता, और सौख्य का दाता है ।

नगण का स्वर्ग देवता और अखंड सुखका दाता है। पंडित ऐसा फल कहते हैं ॥

प्रश्नतन्तुः।

यदि प्रश्न कर्तुरुच्चारणे त्रयोगुरुवस्तदा मगणो ज्ञेयः। तस्यफलम्। श्रियमात नोति कोर्थःलक्ष्मी सिद्धि स्त्रियमातनोति विस्तारयतीत्यर्थः। एवं अन्येषामपिग णानांफलं बोद्धव्यम्—

॥ प्रश्न निकालने की रीति ॥

भाषार्थ–यदि प्रश्न पूछने वाले के बोलनें में तीनगुरु अक्षर हों तव मगण जानना ॥ उसका फल लक्ष्मी प्राप्ति होती है ॥ ऐसेही और गणों का फल जानना चाहिये।

यगणेन धन सन्तानादीनां बृद्धि वां· च्या नेनमृत्यु मुपादिशेत् तेन परदेश गमनम् तेन शून्यफलं। तेनरोगं प्रव देत्! भगणेन निर्मलयशो ब्रूयात् नगणेनाऽखण्ड सुखमिति॥ गुरुणागुरु लघुना लघुकार्यं प्रवदेत्॥

भाषार्थ....यगण से धन सन्तान आदिकी वृद्धि कहनी। रगण से मृत्यु रोगका प्रश्न कहना। सगण से परदेश की यात्रा का प्रश्न कहना ।। तगण से खाली प्रश्न कहना जगण से रोगका प्रश्न, भगण से स्वच्छ यशका प्रश्न कहना। नगण से अखंड सुख कहना ।। गुरुसे गुरु कार्य। लघुसे लघु कार्य कहना ।।

तेषां गुरु लघुरूपमाह। आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्तिगौरवम् ! यरता लाघवं यान्ति मनौतु गुरु लाघवम् ।। यथा ऽऽ। म ऽऽऽय । ऽऽर ऽ।ऽस ।। ऽत पृथिव्यादीनि पञ्च भूतानि यथा संख्ये नज्ञेयानि । जेन तमो भेन सतो नेन रजोग्रहणम् । त्रयाणां गीतोपनिषद्भिः फलम् बाच्यम् ।।

भाषार्थ—उन गुरु, और लघु, अक्षरों का स्वरूप कहते हैं मगण, जगण, सगण ये आदि मध्य अन्त में गुरु हैं ।। और यगण रगण तगण ये लघु होते हैं। और मगण; सर्व गुरु, तथा नगण सर्व लघुवाला होता है।। जैसे आगे हैं ।।

म ऽऽऽ य ।ऽऽ र ऽ।ऽ स ।ऽ त ऽऽ। ज ।ऽ। भ ऽ।। न ।।। × मगणसे तगण तक पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश यथा संख्या जानना ॥ जगण से तमोगुण ॥ भगण से सतोगुण, नगण से रजोगुण ग्रहण करना ॥ पिछलें तीन गणोंका फल गीता और उपनिषदों से कहना । क्यों कि गणों के स्वभाव गीता आदि में भली भांति कहे है ॥ और सतोगुणका फल शांति रजोगुण का बडे २ काम करना ॥ तमोगुण का फल क्रोध आदि जानना ॥ इति प्रथम परिच्छेदः ॥

॥अथ चलाऽचल विचारार्थ प्रश्न सिद्धान्त चक्रम् ॥

०	म	य	र	स	त	ज	भ	न	गणाः
०	ऽऽऽ।	।ऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।।	।।।	लघुगुरुवः
०	मू	न	ते	वा	आ	तम	सत्व	रज	गुणतत्वानि
०	स्थिर	चर	चर	चर	स्थिरः	द्विस्वं भाव	चर	स्थिर	स्वर,स्थिरः द्विस्वभावाः
०	स्त्री	पुरूष	पुरुष	नपुंसक	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्रीपुरुषादि संज्ञा
०	मूल	जीव	धातु	जीव	ब्रह्म	जीव	जीव	जीव	चिन्ता
०	मित्र	भृत्य	शत्रु	शत्रु	सम	सम	भृत्य	मित्र	मित्रादिसंज्ञ
०	पीत	श्वेत	रक्त	हरित	नील	ईषत रक्त	श्वेत	ईषत रक्त	रंगाः
०	पूर्व	पश्चि.	अग्नि	वायव्य	ईषान	उत्तर	दाक्षिण	नैऋत	दिशा

अथ द्वाभ्यां २ गणानां फलम् । द्वाभ्यां मित्रगणाभ्यां कार्यसिद्धि मित्रलाभो भवेत् । मित्र सेवकाभ्यां गोत्रेपीडा स्यात् इति मित्रगण प्रक्रिया । भृत्यमित्राभ्यांसकलकार्य सिद्धिः । द्वाभ्यांभृत्याभ्यांसर्वे । भृत्य शत्रुभ्यां मित्रशत्रुर्भवेत् त्यसमाभ्यांधनस्यनाश इति भृत्यगण प्रक्रिया फलम् । शत्रु मित्राभ्यां अति पीडा । शत्रु सेवकाभ्यां स्त्रियनाशः तदङ्गे पीडाच । द्वाभ्यां शत्रु गणाभ्यांप्रत्यक्षहानिर्जानीयात्शत्रुसमाभ्यांसुखस्य नाशः ॥ इति शत्रुगणप्रक्रिया ॥ द्वौ समानिष्फलौभवतः । सममित्राभ्यां तुच्छफलम् ॥ समानु चराभ्यां स्वामिना उदासीनता ! समारिभ्यां विरोधः । पति समगण प्रक्रिया फलम् ॥

भाषार्थ--अब कार्य सिद्ध होगाकि नहीं इस विचार के लिये दो दो गणों का फल कहते हैं ॥ प्रश्न के उत्तर दैने वाले को चाहिये कि पूर्वोक्त चक्र में

मित्रादिसंज्ञा देखके उत्तर दे । यदि प्रच्छक के बोले हुए वाक्य में दो मित्र गणपड़ें तो कार्य सिद्ध और मित्र लाभ होय यह उत्तर कहना । और मित्र सेवक गणपड़ें तो कार्य जीतके साथ सिद्ध हो ॥ यदि मित्र शत्रु दो गण प्रच्छक के कहे हुए अक्षरों में आवें तो उसके किसी प्यारे बन्धु का नाश होय । मित्र तथा समगणों से गोर्प अर्थात् कुटुँब में किसी को पीडा हो यह दो २ मित्र गणों का फल है ॥ भृत्य संज्ञक और मित्र संज्ञावाले गणों से सब कार्य सिद्धि कहना । और दो भृत्य गणों से सब वश में आजाते हैं । भृत्य और शत्रु से मित्र भी शत्रु होजाता है ॥ भृत्य और समसे धनका तथा कार्य का नाश होता है । यह भृत्य गणों का फल है। पहिले शत्रु गण और उसके आगे मित्रगण आवे तो बहुत पीडा कष्ट है ऐसे कहना । और शत्रु और सेवक से स्त्री का नाश हो और पृच्छक की स्त्री को पीडा कहनी । दो शत्रु गणों से प्रत्यक्ष हानि जाननी । शत्रु और समगण से सुख का नाश कहना। यह शत्रु गण की प्रक्रिया पूरी हुई दो सम निष्फल होते हैं सम और मित्र से थोडा अर्द्ध लाभ वा कार्य होता है । सम और भृत्य से स्वामी की उदासीनता होती है । सम और शत्रु से

आपस में विरोध होता है । इति समगण प्रक्रिया फलम्—

मनौ मित्रे भयौ भृत्यौ सरौशत्रु जतौ समौ ॥

भाषार्थ—मगण, नगण की मित्र संज्ञा है । भगण यगण दोनों भृत्य है । सगण रगण की शत्रु संज्ञा है जगण तगण इनकी सम संज्ञा है ॥ इति ॥ ऐसे प्रश्न को सिद्ध असिद्ध कहना ॥

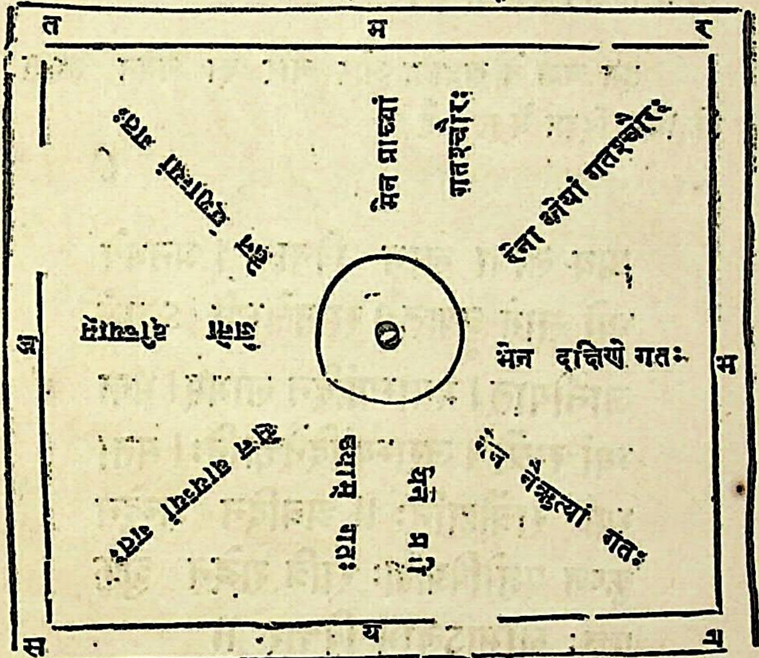
मया भ्यां कार्य सिद्धिस्या द्रेन मृत्युः समादिशेत् । सेनक्षयो विजानीयात् तकाराន्निष्फलं बदेत् ॥

भाषार्थ—मगण यगण से कार्य सिद्ध होय । रगण से मृत्यु कार्य नाश हो । सगणसे क्षय जानना । तगण से निष्फल कार्य होय ॥

अथ चिन्ता ज्ञानम् ।

प्रश्नाक्षरेषु मुख्यतया आदिमे नैवगणेन चिंता ज्ञानं सम्यग्भवति । मगणे मूल विज्ञानं यगणे जीव चिन्तनम् । रेनधातुं वदे द्धीमान् सेन जीवं विचिन्तयेत् । तेन शून्यं फलं वाच्यम् ह्यथवाब्रह्म

चिन्तनम् जगणे रोगशोकार्त्तः प्रश्नकर्त्ता सदा भवेत् । भगणेन यशः स्वच्छं नेन श्रेयो विनिर्दिशेत् ॥ इति मूकः ॥



उक्त चक्रेण निधि चौरादयो दृष्टव्याः ।

अथ चिन्ता ज्ञान कहते हैं ।

भाषार्थ---प्रश्न कर्त्ता के वाक्यमें मुख्यता करके पहिले ही गण से चिन्ता ज्ञान भली भांति से होता है मगण से मूल प्रश्न कहना । यगण होने पर जीव चिन्ता । रगण से धातु प्रश्न कहे बुद्धिमान । सगण से जीव चिन्तन कहना । तगण से शून्य फल खाली प्रश्न कहना अथवा जीव चिंतन ब्रह्म चिन्ता कहना।

जगण से पूछने वाला रोग और शोक से पीडित कहना। भगण से जीव प्रश्ण और यश चाहने वाला स्वच्छता से कहना। नगण से मूल प्रश्न और कल्याण कहना ॥ इति मूकः ॥

इस चक्र से खजाना और चोर का गमन कहना कि किस दिशा में गया है ॥

अथ लाभा लाभ विचारः। मनभये भ्यो लाभं ब्रूयात्। रसतजेभ्यो ऽलाभं जानीयात्। मनाभ्यांदिन लाभम्। भया भ्यां रात्रौ। जराभ्यांदिने हानिः। सता भ्यां रात्रौहानिः॥ अत्रदिन शब्देन कृष्ण पक्षोपिग्राह्यः रात्रि शब्देन शुक्ल पक्षः लाभाऽलाभ विचारः॥

भाषार्थ....अथ लाभ और अलाभका विचार यह है। म-न-भ-य-इन चार गणों के आने से लाभ कहना र-स-त-ज-इनसे अलाभ कहना॥ मगण नगण से दिनमें लाभ कहना भगण यगण से रात में लाभ वताना। जगण रगण से दिनमें हानि। सगण तगण से रात में हानि बताना। दिनका अर्थ कृष्ण पक्ष है रात का शुक्ल पक्ष में लाभ कहना॥ इति॥

अथ गर्भ विचार चक्रं ।

यथा कश्चित्पृच्छति अस्याः पुत्रोभविष्यति वापुत्रिका । तदा स्त्री संज्ञकैर्गणकन्यां प्रवेदत् । पुरुष संज्ञकैश्चपुत्रं नपुंसकान्नपुंसकम् ॥

म	य	र	स	त	ज	भ	न
कन्या	पुत्र	पुत्र	नपुंसक	नपुंसक	पुत्र	कन्या	पुत्र

भाषार्थ—अब गर्भवती के क्या होगा इसका विचार लिखते हैं. जैसे कोई पूछता हो कि इस स्त्री के पुत्र होगा अथवा पुत्री तब स्त्री संज्ञक गणों से कन्या कहे ! और पुरुष संज्ञकों से पुत्र और नपुंसक गण उसके बोलनेके वाक्य में हो तो नपुंसक-हीजडा हो ऐसा उत्तर देना. इस में यह विचार है कि पहिले ही गण से उत्तर देना ॥

अथ धातु प्रश्न ।

तत्राद्योधाम्याधाम्यविचारः । इजाभ्याधाम्यः सनाभ्यां ह्यर्द्धधाम्य भयमतेभ्योऽधाम्यः ॥

म	य	र	स	त	ज	भ	न
मृत्तिका पाषाण हरिताल	पुष्पराग	लाल	अञ्जन नीलम सुरमा	मर्कत मनसिल	लहसुनियां	चांदीरांग	मूंगा गेरू

म. भ. र. जे. भ्यो. भूषणम् । यसतें-
भ्योपात्रम् । नेन नाणकम् ॥

भाषार्थ—पृच्छक जब यह पूछै कि हमारे मन में कैसी धातु है वा खोई गईहै । तब मगण भगण रगण जगण इनसे गहना बताना । यगण, सगण. तगण. से बरतन बताना: नगण से धातुका टुकडा कहना ।

अथाम्य धातु चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
सोना	रूपा पीतल	सोना	जस्त	लोहा	सोना तांबा	चांदी रांग	कांसा

इति धातु प्रकरणम् ।

जीव चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
जरायुज	उद्भिद जरायुज	स्वेदज	अंडज	अंडज	जरायुज	स्वेदज	जरायुज
चतुष्पद हृस्व	द्विपददीर्घ	द्विपदहृस्व	पक्षी हृस्व	आपद छोटा	द्विपददीर्घ	चतुष्पद हृस्व	दीर्घ द्वि- वता
स्त्री. पुरुष. पीत	ब्राह्मण	क्षत्रिय	तिर्यक्लाल हरित	सर्पादि कृष्ण	क्षत्रिय	वृक्ष जल ऊंट	नील शूद्र वैश्य

अधुना जीव प्रश्नः । तत्रचतुर्विधाजीवाः स्वेदजोद्भिद अंडज जरायुज भेदात्

भाषार्थ—अब जीव प्रश्न का विचार ऊपर के अनुसार करना चाहिये। इसमें चार प्रकार के जीव संसार में हैं जो पसीने से उत्पन्न होते हैं, और जो बनस्पति घास वृक्ष, जो अंडों से होतेहैं। और जो मनुष्यादिक जेर में लिपटे पशु आदि हैं ऐसे चार प्रकार के भेद से जानों।

अवस्था चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
बाल	वृद्ध	कुमार	युवा	मृत	युवा	बाल	युवा

जीव प्रश्ने केनचित्संपृच्छते मम मन-
सि कीदृशो जीवोस्ति तदा चतुर्भिश्चक्रै
रुत्तरं देयम् ॥

। ऽ ऽ

यथा भाषायां (कहो जी) इति केन
चित् कथितम् । उक्तशब्दे यगणोस्ति
तस्य जातिर्ब्राह्मणः । वृद्धावस्था । गौरव
र्णः अतिदीर्घः एवमुत्तरं दातव्यम् ।
इति वर्ण तथा जाति विचारः ॥

भाषार्थ—कोई जीव प्रश्न पूछता है । कि मेरे मनमें कैसा जीव है । तब पूर्वोक्त चार कोष्ट के यंत्र से उत्तर देना । जैसे किसी ने पूछा (कहोजी) ऐसा भाषा शब्द में एक लघु दो गुरु अक्षर का यगण है, उसकी ब्राह्मण जाति है और बूढा है, गोरा रंग और बहुत लंबा शरीर ॥ ऐसा उत्तर देना ॥

॥ विदेश गतस्य विचारः ॥

आयाति यगणे शीघ्रं तथैव मगणे
स्थितः । प्रयाति सगणे ऽन्यत्र रेन्हा-
नौमृतश्चतात्जगणेरोगसंयुक्तोभेनरोगा
द्विनिसृतःनगणेनसुखंशेतेविदेशस्थःसदा

पुमान् । भयाभ्यां सुख संपत्ति रसाभ्यां ज्वर पीडितः ॥

॥ परदेश गये का विचार ॥

भाषार्थ—यदि पूछने वाले के वाक्य में यगण हो तो परदेशी जल्दी आवै मगण हो तो वहां ही ठहरा हुआ है सगण होतो वहां से भी आगे चला गया कहना रगण से हानिमें है तगण हो तो मरगया ऐसा कहना जगण होतो रोग युक्त है भगण हो तो रोग से परदेशी छुटगया, नगण हो तो सुख में परदेशी सोता है मगण यगण से सुखी और धन से युक्त कहना । यदि रगण सगण साथ हो तो परदेशी को ज्वर से पीडित कहना ।

॥ अथ रोगिणो रोग विचारः ॥

मत्ताभ्यां केशेषु रोगम् ! जमाभ्यां रक्ते रोगम् द्वाभ्यां मगणाभ्यां अस्थिनि रोगम् । मजाभ्यां मांस रोगम् । भया त्वचि रोगम् । रजाभ्यां मेदे रोगम् । मेनवसायां रोगम् । येन शुक्रे । जेन अस्थिनि रोगम् । रेनमज्जायाम् । भेनरक्ते सेन त्वचि । नेन स्नायुषु ॥

अब रोगी के रोग का विचार करते हैं

भाषार्थ——जब पृच्छक पूछे कि रोगी के किस स्थान में रोग है तब ऐसा उत्तर देना । मगण तगण से बालों में रोग कहना । जगण मगण से लहू में रोग बताना । दो मगणों से हड्डी में रोग । म० ज० से मांस में रोग । भ० य० से चर्ममें रोग । ० ज० से मेदा में रोग । मगण से वसामें रोग । यगण से वीर्य में रोग । जगण से हड्डी में रोग ॥ रगणसे मज्जा रोग ॥ भगण से रक्त में रोग ॥ सगण से त्वचा में रोग ॥ नगण से नाडियों में रोग बताना ॥ इति ॥

॥ अथ साध्या ऽसाध्य विचारः

तेन असाध्यः । सेन कष्ट साध्यः ॥
रेन अति कष्टसाध्यः । येन साध्यः
मेन साध्यः । जेन कष्टसाध्यः । भेनसा
ध्यः । नेन सुख साध्यः ॥ इति ॥

भाषार्थ——अब रोगी का साध्य असाध्य विचार यों है ॥ तगण से असाध्य रोग ॥ सगण से कष्ट साध्य ॥ रगण से बहुत कष्ट साध्य है ॥ यगण से साध्य मगण से साध्य ॥ जगण से कष्ट साध्य ॥ भगण से साध्य ॥ नगण से सुख साध्य रोग है ऐसा कहना ॥

अस्य रोगिणो मृत्यु र्भविष्यति वा जीवनम् इति प्रश्न रसतजेभ्यो मृत्युं वदेत् मन भयेभ्यो जीवनम् ॥ इति ॥

भाषार्थ--कोई पूछे इस रोगी की मृत्यु होगी कि जीवेगा ॥ इस प्रश्न के उत्तर में रगण, सगण, तगण, जगण, से मरेगा ऐसा कहना । और मगण, नगण, भगण, यगण, से जीवेगा । ऐसा कहना ॥ इति ॥

अथ कश्चित्पृच्छति मदीया स्थिति रत्र भविष्यति वा इतो गमनं भविता । तदा मतनेभ्यो स्थितिः । य र स ज भेभ्यो गमनं ब्रूयात् ॥ इति ॥

भाषार्थ--अब कोई पूछता है कि मेरी स्थिति यहां होगी कि यहां से गमन होगा ॥ तब म, त, न, से ठहरोगे ॥ य, र, स, ज, भ, से, जाओगे ऐसा कहना

॥ अथ जय पराजय विचारः ॥

कश्चिदागत्यैवं ब्रूयान्मे जयः वा पराजयो भविष्यति ॥ तत्रादौ अयं विचारः कर्त्तव्यः । प्रश्न कर्ता यायी वा स्थायीति अनुयोग कर्ता यायी चेत् तदा मत

भयेभ्य स्तस्यपराजयः। रसतजेभ्यो ज-
यः। जयः ! यदिचेत् पृच्छा कर्त्ता स्था-
यी तदा रसतजेभ्य स्तस्य पराजयः
मंनभयेभ्यो जयः॥ इति जय पराजय
विचारः॥

भावार्थ--अव मुकदमे में हारहोगी बा जीत उसका विचार करते हैं॥ कोई आकर ऐसे बोले कि मेरी हार होगी वा जीत वहां पहिले यह विचार करना योग्य है, कि प्रश्न पूछने वाला यायी (मुद्दई) हैं बा स्थायी (मुदआलह)। पूछने वाला यायी हो तब म० न० भ० य० से उसकी हार कहनी। र० स० त० ज० सै जीत॥ यदि पूछने वाला स्थायी हो तव र. स. त. ज. से उसकी हार कहनी म. न. भ. य. से--जीत॥ इति॥

अथ मूल प्रश्न विचारः।

मूले प्रश्न वक्ता इदं प्रेक्षणं कुर्यात्।

मूल प्रश्न में प्रश्न कहने वाला पहिले यह देखे कि

म	न	स	भ	ज	य
मूल	स्कन्ध	त्वचा	पत्र	पुष्प	फल

भ	र	म	त	य	स
श्वेत	रक्त	पीत	कृष्ण	चित्र	हरित नील

कश्चित् पृच्छति मया किं भक्षितम् वा किं भक्षयिष्यामि । तदा पूर्वोक्तेन चक्रेणोत्तरं देयम् मन भये भक्ष्यम् । रसतजैर भक्ष्यम् ॥ इति मूलप्रश्नः ।

भाषार्थ—कोई पूछे कि मैंने क्या खाया है अथवा क्या खाऊंगा तब पहिले कहे हुए चक्र से उत्तर देना । यदि म० न० भ० य० हो तो भक्षण के योग्य पदार्थ खाये है र० स० त० ज० से भक्ष्य अच्छे २ भोजन खाये है वा खाओगे ॥ इत्यादि विस्तार मूल में है ॥

॥ अथाष्ट ८ करण चक्रम् ॥

विष्णुः चं—मनः—भ—	ब्रह्मा सू—बुद्धिः—म—
शक्तिः बु०—चित्तम्—स—	रुद्रः म०—अहंकार—र—

॥ स्वादु शुष्क आर्द्रादि चक्रम् ॥

गणाः	शुष्कादि	स्वादु	शीतोष्णादि	पिंड वास्फुटित	मूलादि	रंगादि
म	आर्द्र	षट्विध	शीत-गरम	पिंड	मूलकंवल ककड़ी आदि	७ पीत
य	आर्द्र	मिष्ट	शीत	पिंड	फल	श्वेत
र	शुष्क	तिक्त	उष्ण	स्फुटित	जमीकन्द आदि	रक्त
स	शुष्क	अम्ल	शीत-गरम	स्फुटित	स्वकू कद्दू आदि	हरित
त	शुष्क	कटु	बासी	कण	फोग आदि	कृष्ण
ज	शुष्क	तिक्तमधुर	शीत-गरम	स्फुटित	पुष्प कचनार आदि	ईषत् रक्त
भ	आर्द्र	मधुर	शीत	पिंड	पत्रशाक	श्वेत
न	आर्द्र	मधुर	शीत-गरम	पिंड	स्कन्ध	पीत

" मनसा सङ्कल्प विकल्पयोश्चिन्तनम् बुद्धया पदार्थ निश्चय चिन्ता। चित्तना नु सन्धानम्। अहंकारेण इदं कार्यं कृतं इदं करिष्ये। एताः अन्तः करण वृत्तयः

भाषार्थ—ऊपर जो चार दल का अन्तः करण चक्र लिखा है उससे प्रश्न कहना वेदान्त शास्त्र का मत है॥ इस चक्र की चार वृत्ति—स्वभाव है मन से संकल्प विकल्प की चिन्ता अर्थात् यह काम इस प्रकार हैं वा ऐसे। जैसे चांद की चांदनी में पडीहुई रस्सी में सर्प की भ्रांति कि यह सांपहै वा रस्सी ऐसा बिचार मनका धर्म है। बुद्धिसे निश्चय सत्य ज्ञान होता है जैसे यह रस्सी ही है सांप नहीं। चित्त से अनुसंधान किया जाता है अर्थात् विचार जितनी देर सोचने में लगी। अहंकार से यह काम किया—और मैं यह करूंगा॥ ये चार स्वभाव अंतः करणके हैं।

❀ इति ❀

मनोक्ष दुखम्	बुद्धि भ्रमः
म० र० म०	म० र० म०
ल० र ल०	र० र० र०
सुख इच्छा	अतिक्रोध

यात्रा चिन्ता	बुद्धि वृद्धि चिंता
भ० स० भ०	म० स० स०
स० स० स०	र० स० र०
दूर गमन चिंता	मित्र चिंता

यश लाभ	धन सुख इच्छा
भ० न० भ०	म० न० म०
स० न० स०	र० न० र०
यात्रा से सुख इच्छा	धन कब मिले

ज्ञान इच्छा	धर्म इच्छा
भ० त० भ०	म० त० म०
स० त० स०	र० त० र०
सत्संग	रोग शांति

आधिः	मंद बुद्धि
भ० ज० भ०	म० ज० म०
स० ज० स० संचय इच्छा	र० ज० र० अहंकार महत्व

संतान सुख इच्छा	संतान
भ० य० भ०	म० य० म०
स० य० स० द्रव्य लाभ चिंता	र० य० र० पुत्र कब होय

धन चिंता	लक्ष्मी
ल० स० भ०	स० स० स०
स० भ० ल०	र० स० र०
संचय चिंता	वृद्धत्व इच्छा

मनोद्वेग	काव्यरचना
भ० भ० भ०	स० स० र०
स० भ० ल०	र० भ० र०
आगत रक्षा	ख्याति इच्छा

एव मेवाविधेश्चतुःषष्ठि श्चक्राणि भवन्ति

भाषार्थ—ऐसे ही चौंसट चक्र होते हैं जैसे पूर्वोक्त आठ हैं ॥

प्रश्नकर्ता यस्यां दिशिस्थितः तस्या अपि गण ग्रहणमकर्त्तव्यम् । तस्माद्गणा दपिफलं वाच्यम्

भाषार्थ—पूछने वाला जिसदिशामें आकर बैठे उस का भी गण ग्रहण करना चाहिये । उस गण से भी फल कहना ॥

॥ दिशा गण चक्र ॥

म	य	र	स	त	ज	भ	न
पूर्व	पश्चिम	अग्नि कोण	वायव्य कोण	ईशान कोण	ईशान	दक्षिण	नैऋत

अथ विविध प्रश्नाः । यराभ्यां धातु प्रश्नः । मराभ्यां धातु प्रश्नः

भाषार्थ—अब नाना प्रकार के प्रश्न कहे जाते हैं यगण रगण से धातु प्रश्नः । मगण रगण से भी धातु प्रश्न कहना ॥

॥ मैत्री विरोध चक्रम् ॥

य० र०	स० र०	भ० ज०	म०ज०	त०
विरोधः	मैत्री	विरोधः	मैत्री	अविरोधः

॥ अथदग्धाक्षराणि ॥

ह	ज	घ	न	स	भ	घ	र

एतेषामष्टानां आदावुच्चारणात्कार्य नाशो वक्तव्यः ॥

भाषार्थ....प्रश्न कर्ता के बचन में ये आठ अक्षर वचन के आदिमें आवें तो उसका कार्य नाश होजाय ऐसा कहना ।। जैसे किसी ने कहा (हमारा कार्य कैसा होगा) इस बचन के आदिमें दग्ध अक्षर (ह) कार है । इसमें उसे कहना कि तुम्हारा जीव प्रश्न है परन्तु वह सिद्ध न होगा बीमार हो तो कहना मर जायगा रोगी हो तो कहदो अभी रोग नहीं हटेगा ।।

।। अथ ब्यापार प्रश्नः ।।

यदाकश्चिदागत्यएवंपृच्छेतअस्मान् कीदृग्व्यापारेलाभो भविष्यति । तदामेन अन्नादिनायेनरसेन । रेनधातुना । सेन तुषैर्वातुलादिना । दूरदेशेतन्तुभिरित्यर्थः। तेनवाण्यावागब्यापारेण यथा भाषायां (दलाल) पदवाच्येन । अथवाप्राड्विवाक (वकील) ब्यवसायेन जेनधातुना । मेनौषधिभिः नेनस्थित्यालाभंवदेत् ।

।। इति ।।

।। अथ ब्यापारप्रश्न का विचार है ।।

भाषार्थ....जब कोई आकर ऐसे पूछे हमको कैसे ब्यापार में लाभ होगा । तब मगण से अन्नादि से लाभ

यगणसे रस गुडतेल कपास नमक आदि से । रगण से धातु सोना चांदी कांसी पीतल तांवा रांग कांसी आदिसे । सगण से घास तिनका रुई परदेशमें लकडी आदिके कृत्य से लाभ कहना ॥ तगण से वाणी के व्यापार से जैसे (दलाली) करने वा (विकालत) जगण से धातु से । मगण से औषधि वैद्यक विद्या से नगण से घर वैठे लाभ हो ॥ इति ॥

यदि कश्चित्पृच्छति अमुक वस्तु विक्रयं मयाकरणीयमथवा न करणीयम् । तदामयाभ्यां विक्रयंकुरु इत्युत्तरं तस्मै-देयम्।अन्यैश्चमा कुरु इति ब्रूयात ॥

भावार्थ—अब कोई पूछता है फलानी वस्तु को मैं वेचूं वा न बेचूं । तव मगण यगण से वेचदे ऐसा उत्तर देना चाहिये । और गणों से मत वेचो ऐसा कहै ॥

अथ कश्चित्पृच्छतिकस्मिन् मासि महर्घ्यंवासमर्घ्यं भविष्यति तदावर्तमा-न मासिप्रथमो गणः स्थाप्यः । द्वितीये द्वितीयः । तृतीये तृतीयः एवमेवात्रापि

॥ चक्रम् ॥

र	ज	स	त	य	भ	म	न
महर्घ्यं मंहगा	महर्घं महंगा	विदेशे महर्घ्य पर देशमें महंगा	स्वदेशे महर्घं अपने देशमें मंहगा	समर्घं सस्ता	समान	समान	समान

भाषार्थ–अब कोई पूछे कि किसमास में मँहगा नाज वा सस्ता होगा। तब वर्तमान मासमें पहला गण और दूसरे में दूसरा तीसरे में तीसरा ऐसेही गण स्थापन करे गण चक्र के अनुसार फलदेख उत्तरदे।

काश्चित्पृच्छा कर्ता पृच्छति ममकस्य गृहस्य दोषोऽस्ति तदा ऽनेन चक्रेणोत्तरं दद्यात् ॥

सू	चं०	भं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा० के०
सूज	भ०	र०	स०	म०	य०	न०	त०

प्रश्नाक्षरेषु जगणश्चेत्सूर्य दानम् भेन चंद्र दानम्। रेन भौमदोषःभौमदानम्। एवं सर्वेषां बोध्यम् ॥

भाषार्थ–कोई पूछने वाला पूछे मेरे किसग्रह का दोष है तब इस उपरोक्त चक्रसे उत्तरदे। प्रश्न के

अक्षरों में जगण होतो सूरज का दान बताना उससे रोगशान्ति हो। भगण से चन्द्रमा का दान। रगण से मंगल का दोष कैडा है इस से मंगल का दान बताना उसके करने से शान्ति होगी ऐसेही जिसगण के ऊपर जो ग्रहहै वही उसका स्वामी जानों उसके अनुसार फलदान कहना ॥

॥ लग्न चक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६
८	७	९	म०	ज०	१२
र०	य०	स०	१०न	११ त०	भ०

भाषार्थ लग्नों के स्वामी गणों से लग्न निश्चय होते हैं ॥

॥ बलाऽबल चक्रम् ॥

भ०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०
दिने दिनमें	रात्रौ रात में	मध्यान्हे दुपहर	अर्द्ध रात्रौ आधी रात में	कृष्ण पक्षे अंधेरे पाख	शुक्ल पक्षे चांदने पाख	उत्तरायने	दक्षिणायने	दक्षिणार्धे दाहिना	पृष्ठार्धे	पूर्वार्धे	वामार्धे

सन्धि चक्रम्

भ० ज०	प्रातः काले
ज० भं०	मध्यान्हे
ज० भ०	सायम्
भ० ज०	निशार्थे

तिथि चक्रम्

१ र	६ र	११ भ०
२ य	७ भ	१२ स०
३ भ	८ ज	१३ नं०
४ नं०	९ भ०	१४ ज० १५ भ०
५ र०	१० ज०	३० ज०

बार चक्रम्

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
ज० न०	भ०	र०	म० स०	त० म०	य०	स०

ऋतुषु बलवन्तो गणाः ।

११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वसन्त म०		ग्रीष्म य०		प्रावृट् र०		वर्षा स०		शरद् भ०		हेमंत न०	
फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशिर	पौष	माघ
त०	र०	स०	स०	य०	य०	म०	य०	स०	स०	र०	त०
न०	न०			ज०	ज०			भ०	भ०		स०

नक्षत्र गण चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
अ०	अ०	कृ०	पुन	मू०	म०	मृ०	ध०
रो०	श०	पुष्य०	चित्रा	पूर्वा	उत्तरा	श्र०	उत्तरा
रे०	पूर्वाषाढ	श्ले०	ज्ये०	भाद्र	फाल्गु		भाद्र
ऽभि	उत्तरा	म०	०	पद	नी०		पद
०		पू०	०		हस्त		
०		स्वा०	०		ऽनु		
		वि०	०		०		

अथान्य प्रकारेण गणग्रहण विधि ।

सर्वदा अर्द्ध निशाया इष्टपंच दश १५ योगाद्धार प्रवृत्ति भवति सएवसूर्योदयः । तत्सूर्योदयादेव शुक्ल कृष्ण पक्षयोवार प्रवृतितो गणग्रहणम् कर्त्तव्यम् । अत्र

रात्रि दिनात्मकं षष्ठी नाड्यात्मक मेव ग्राह्यम् ॥

भाषार्थ–अब और प्रकार से गण ग्रहण करने की विधि कहते हैं। सदा आधीरात के मिश्रमानमें १५ जोडने से बार लगता है उसी को सूर्योदय कहते हैं। उस सूर्योदय से शुक्लपक्ष और कृष्ण पक्ष की बार प्रवृ॰ ति से गण ग्रहण करना। इस में दिनरात ६० घडी का जानना ग्रहण करना ॥

शुक्लपक्ष सूर्य्य भौमके गण।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
म	य	र	स	त	१
त	म	य	र	स	२
स	त	म	य	र	३
र	स	त	म	य	४
य	र	स	त	म	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घडी

चंद्र बुधके गण।

ला॰	ग॰	श्रीः	दुःख	मृ॰	प्रहर
य	र	स	त	म	१
म	य	र	स	त	२
त	म	य	र	स	३
स	त	म	य	र	४
र	स	त	म	य	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घडी

॥ बृहस्पति के गण ॥

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
र	ल	तं	मं	य	१
य	र	ल	त	म	२
म	य	र	ल	तं	३
त	म	य	र	ल	४
ल	त	म	य	र	५
१॥	१।	२	।।।	॥	घड़ी

शुक्र के गण।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
ल	त	म	य	र	१
र	ल	त	म	य	२
य	र	ल	त	म	३
म	य	र	ल	त	४
त	म	य	र	ल	५
१॥	१।	२	।।।	॥	घड़ी

शनीश्चर के गण

ला०	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्युः	प्रहर
त	म	य	र	ल	१
ल	त	म	य	र	२
र	ल	त	म	य	३
य	र	ल	त	म	४
म	य	र	ल	त	५
१॥	१।	२	।।।	॥	घड़ी

इति शुक्लपक्ष ग्रहगणाः

शनि चंद्रौ कृष्णपक्ष गणाः ।

ला०	ग०	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
त	य	स	म	र	१
य	स	म	र	त	२
स	म	र	त	य	३
म	र	त	य	स	४
र	त	य	स	म	५
१॥	१	२	॥।	॥	घड़ी

बुधे

ला०	गम०	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
र	त	य	स	म	१
त	य	स	म	र	२
य	स	म	र	त	३
स	म	र	त	य	४
म	र	त	य	स	५
१॥	१।	८	॥।	॥	घड़ी

बृहस्पति के गणा

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
य	स	म	र	त	१
स	म	र	त	य	२
म	र	त	य	स	३
र	त	य	स	म	४
त	य	स	म	र	५
१॥	२।	२	॥।	॥	घड़ी

शुक्र के गण ।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
म	र	त	य	स	१
र	त	य	स	म	२
त	य	स	म	र	३
य	स	म	र	त	४
स	म	र	॥।	य	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घड़ा

मंगल और सूर्यके गण ।

ला०	ग०	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
स	य	र	त	य	१
म	र	त	य	स	२
र	त	य	स	म	३
त	य	स	म	र	४
य	स	म	र	त	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घड़ी

इति कृष्ण पक्षगणाः ।

अवधि चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
वर्ष	मास	दिन	ऋतु	वर्ष	दिन	मास	अयन

वारोदयात् षट् २ घटीषुगण ग्रहणं कर्त्तव्यम् । अहोरात्रयोर्दशप्रहरा भवंति । दशसु पूर्वोक्त चक्रैर्गण ग्रहणं कर्त्तव्यम् ॥

भाषार्थ—वार प्रवृत्ति से छः छः घडी में गण ग्रहण करना ॥ दिन रात के दश पहर हुए क्योंकि दश छक्के ६० इस प्रकार से दशपहरों में पहिले चक्रों से गण ग्रहण यों करना ॥ दोनों पखवारो के वार चक्र देखके फल कहना ॥

लाभेत्र लाभंगमनेप्रयाणं राज्ये श्रियं स्वप्न मतीवदुःखं मृत्युर्विवादः कलहश्च पीडा गणैः फलं वै कवयो वदन्ति। लाभेच मासि गमने तु पक्षे राज्येदिनानां तृतयं सुषुप्तेः । षण्मास दुःखेषुचवर्षमृत्यौ ह्यवधि प्रमाणं कथितं द्विजेन्द्राः

भाषार्थ—लाभमें गण हो तो लाभ कहना । गमन में यात्रा । राज्य में लक्ष्मी प्राप्ति । स्वप्न में दुःख । मृत्यु में विवाद लडाई पीडा कहना । लाभ में एक मास अवधि । गमन में पाख । राज्य में कुछ दिन स्वप्न में अप्रमाण, दुःख में छःमास । मृत्यु में वर्ष की अवधि कहना हे ब्राह्मणो ॥

वर्षा विचारः

तभाभ्या मन्धकारमेघौ । मभाभ्यांवायु श्च लिष्यति । जयाभ्याम पिवायुरेव । रभाभ्यां वायु चलनम् । सभाभ्यां वर्षणं भवेत् ॥ इति वर्षा विचारः ॥

भाषार्थ—अव पृच्छक पूछे कि वर्षा कव होगी तव तगण, भगण से आंधी मेह आवे । मगण भगण यदि वाक्य में हो तो हवा चलै । जगण से भी वायुच-ले । रगण भगण से भी वायु चले । ऐसा कहना । परन्तु सगण के पीछे भगण हो तो बहुत वर्षा हो इति ॥

प्रश्णेमुख्यम् । वर्णोच्चारणहस्त दृष्टिर्दि ग् बलान्येव दृष्ट्वा प्रश्नं वदेत् ॥ इति ॥

भाषार्थ—प्रश्ण में मुख्य बात यह है कि पूछने वाला जैसे अक्षर बोले वे लिखले । हाथ को देखे कहां रक्खा है । निगाह देखे कहां है । इन को देख के प्रश्न का उत्तर दे ॥ इति ॥

उर्द्धावलोकने जीवो मूल भूम्यावलो-कने । समावलोकने धातु रेवं प्रश्णस्य लक्षणम् ॥

भाषार्थ--किसी महात्मा ने यह बहुत ही सचा प्रमाण कहा है कि पूछने वाला पूछते समय ऊपरको पुतली चढाकर देखेतो जीव चिन्ता । पृथिवी की ओर

देखे तो मूल चिन्ता । यदिसम दृष्टि हो पूछे तो धातु चिंता जाननी ॥

मात्रा प्रस्तार से प्रश्ण की अवधि ।

मात्र प्रस्तार

१	१	७	२१	१३	३७७
२	२	८	३४	१४	६१०
३	३	९	५५	१५	९८७
४	५	१०	८९	१६	१५९७
५	८	११	१४४	१७	२५८४
६	१३	१२	२३३	१८	४१८१

इस प्रस्तार से अवधि कहना—

इतिश्री हारितस्य गोत्रोत्पन्न जिला गुड़गांवां तहसील रिवाड़ी डांकखाना कंवाली ग्राम निवासी स्वामि हरदयालु शर्म्मा रचित प्रश्न कुतूहलः समाप्तः ॥

ग्रन्थ कर्त्ता की वंशावलि ।

स्वामी नन्दरामजी तत्पुत्र स्वामी सहजरामजी तत्पुत्र कुशालीरामजी तत्पुत्र केवलरामजी तत्पुत्र स्वामीजी रामरक्षपालजी तत्पुत्र हरदयालुजी रचित ग्रंथ काणूडिया शासन पं० हरदयालुजी स्वामी के विद्यमान पुत्र मुरारीदत्त १ शिवचरण-वासुदेव ॥ ओं तत्सत्

॥ श्री ॥

सर्वतो भद्र देखने तथा फल बतलाने की रीति

इस चक्र के देखने की यह रीति है कि वर्त्तमान साल के तिथि पत्र में जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो प्रथम

उसको उसी नक्षत्र पर रक्खे, पीछे बांईं तथा दाईं ओर सन्मुख चाल को देखे जो राशि, तिथि, बार, स्वर, नक्षत्र नाम का प्रथम वर्ण विधजावे वही उस पुरुष फलित के श्लोकों में देखे, अशुभ ग्रह होय उसकी शांति करावे औरं जो शुभ ग्रह है तौ पुण्यकरे। जिससे कि अधिक शुभ फल के दाता हो ॥ किमधिकम् ॥

पं०हरदयालु स्वामी

॥ श्री गणेशाय नमः

अथ भाषार्थ सहित

सर्वतो भद्र चक्र

व्यवस्था ॥

....——....

कृत्तिकाभेस्थितः खेटअवृषंनन्दभद्रिकाम्
तुलांत च द्विदेवं वै यमं नारायणं हरेत

भाषार्थ

कृत्तिका स्थित ग्रह (अ वृष २ राशी नन्दा आर भद्रा तिथि तुल ७ राशी (त) और विशाखा, भरणी और श्रवण को बेधता है ॥

ब्रह्मभेसंस्थितः खेटोवयुगंओतुकन्यकाम्
रंस्वातीमुस्बरं दस्र मभिजिदृक्षमाहेरत् ।

रोहिणी पर स्थिर ग्रह (ब) वण २ राशी (औ) स्वर तथा कन्या राशि (र) स्वाति (उ) स्वर और अश्विनी तथा अभिजित को वेधता है ।

सौम्य संस्थोहन्ति खेटःककारंककेंटहरिम्
पंत्वाष्ट्रं चाऽस्वरं लंहि पौष्णर्क्षंवैश्वभंपुरः

मृगशीर्ष नक्षत्र पर स्थित ग्रह–ककार और कर्क सिंह राशी· पकार और चित्रा तथा अकार लकार और रेवती और आगे वैश्व–उत्तराषाढ नक्षत्र को वेधता है ।

आर्द्रासंस्थः खगो हन्या द्धंलकारं ट मर्क
भवाऽक्षरं लृचकारं वे ह्युत्तरा भाद्र भंपुरः

आर्द्रा पर स्थित ग्रह (ह) (ल) (ट) अक्षर और हस्त तथा (व) (लृ) (च) वर्ण और; उत्तरा भाद्र को हननकर साम्हने के पूर्वाषाढ को वेधता है ॥

आदित्य संस्थितः खेटो डमौ चोत्तर
फाल्गुनी कंवृषा जौ दकारंच पूर्वा भाद्र
ञ्च निर्ऋतिम् ॥

पुनर्वसु पर सांस्थित खेट (ड) (म) अक्षर और उत्तरा फाल्गुनी (क) वर्ण और वृष· एवं मेष· राशी और (द) कार तथा पूर्वा भाद्रपद मूल नक्षत्र को वेधता है ॥

पुष्यस्थ खेट ऊकारं भग भं हं युगं
हरेत् । औस्वरं मीनराशींसवारुणं ज्येष्ट
भं हरेत् ॥

पुष्य नक्षत्र पर स्थित ग्रह [ऊ] वर्ण और पूर्वा फाल्गुनी और [ह] अक्षर मिथुन राशी तथा [औ] स्वर मीनराशी (से) अक्षर और शत: भिषा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र को बेधता है ।

आश्लेषा संाश्रितः खेटौ मघां डं कर्कटं
क्रमात् । नन्दां रिक्तां हरेत्कुंभं गकारं
वसु मैत्रभम् ॥

श्लेषा पर बैठा हुआ ग्रह मघा नक्षत्र [ड] वर्ण और कर्क राशी तथा नन्दा १ । ६ । ११ और रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि और कुंभराशी [ग] अक्षर और धनिष्ठा तथा अनुराधा को बेधता है॥६

मघायां संस्थितः खेटो मकारं केसरिं
हरेत् । भद्राजयांतिथिं नक्रं खंविष्णुं
सार्प भयमम ॥

मघापर स्थितः ग्रह म कार और सिंह राशी तथा भद्रा २–७–१२ और जया ३–८–१३ तिथि और मकर राशी (ख) अक्षर तथा श्रवण, श्लेषा और भरणी को बेधता है ॥

पूर्वाफाल्गुनिगः खेटः टं कन्यां मंस्व-
रं धनुः जकार मभिजिद्धन्या दूरवरं
पुष्य दस्त्रभे ।

पूर्वा फाल्गुनी में प्राप्त ग्रह (ट) अक्षर और कन्या राशी (अ) स्वर तथा धनराशी (ज) कार और अभिजित् नक्षत्र [ऊ] वर्ण और पुष्यतथा अश्विनी नक्षत्र को बेधता है ॥

उत्तरर्क्षगतः खेटः पकारं तौलि वृश्चिकं
भवैश्च ऋक्षं मडकार मर्दिति रेवतीं हरेत्॥

ऊपरले श्लोक में छंद भंग है सो जानना

उत्तरा फाल्गुनी पर आया हुआ ग्रह [प] और तथा (भ] उत्तराषाढ (म] [ड] और पुनर्वसु और रेवती को हनन करता है ।

हस्तर्क्षगः खगोरंच एस्वरं यांक्षरं
हरेत् । अंबु भंट लृस्वरं हरुद्र मुत्तर
भाद्रभम ॥

हस्तपर आया हुआ ग्रह [र] [य] पूर्वाषाढ [ट] [लृ] [हैं] और आर्द्रा उत्तरा भाद्रपदा को बेधता है ।

चित्रर्क्षगः खेचरस्तं नकारं नैऋतिं ह-

रेत । पंकेसरि कुलीराकं चन्द्रक्षं पूर्वं
भाद्र मम्र ।

चित्रापर आया हुआ ग्रह (त) (न) और
मूल (प) ५ । ४ राशी (ह) (क) तथा मृग
शिरं और पूर्वा भद्रापद को बेधता है ।

स्वात्पृक्षगः खगो हन्ति ऋस्वरं ज्येष्ठ
भक्रमात् रंकन्या मोस्वरं युग्म वं विधिं
वारुणं हरेत ।

स्वातिपर आया हुआ ग्रह (ऋ) स्वर ज्येष्ठा.
तथा (र) कन्या राशी (ओ) स्वर मिथुनऔर
[व] तथा रोहिणी और शतभिषाको वेधता है ।

विशाखस्थः खगो हन्यान्मैत्र भं तं
तुलां क्रमात् । भद्रां नन्दा वृषं राशिं
अस्वंर वन्हि भं वसुम् ।

बिशाखापर स्थितग्रह अनुराधा (त) तुलाराशी
२ । ७ । १२ भद्रा । १ । ६ ।११। नंदा तिथी और
वृषराशी (अं.] स्वर कृतिका औरधनिष्टा को. बेधेहै

अनुराधा स्थितः खेटो बिशाखं नं
अलिं जयां । रिक्ता तिथिं क्रयं हन्या
ह्लकारं याम्य सार्पभम ॥

अनुराधा स्थित ग्रह विशाखा [न] बृश्चिक

राशी ३ । ८ । १३ जया तिथि ४ । ९ । १४ रिक्ता और मेष राशी (ल) भरणी तथा श्लेषाको वेधता है ॥

ज्येष्ठर्क्षगः खगो हान्ति यकारं चाहमः स्वरम् मीनं चकारं तुरगं ऋस्वरं स्वाति तिष्यभम् ॥

ज्येष्टापर आया हुआ ग्रह (य) कार ९ राशी (अः) स्वर मीन राशी (च) तथा अश्विनी (ऋ) स्वाति और पुष्यको वेधता है ॥

मूलस्थः खेचरो हन्याद्भं नक्रं कुंभ राशिकम् । दकारं रेवतीं नं तं चित्रा मादिति मग्रगाम् ॥

मूलपर स्थित ग्रह (भ) १० राशी तथा ११ (द) रेवती (न) (त) चित्रा आगे पुनर्वसु को वेधता है ॥

तोयर्क्षगो हन्ति खेटो जमैकारं सकारकं आहि र्बुध्न्यं यस्मेचंच रकारं हस्त रुद्रभम् ॥ हस्त रुद्रभम् ॥

पूर्वाषाढपर बैठाहुआ ग्रह (ज) (ऐ) (स) उत्तरा भाद्रपद और (य) [ए) स्वर (र) हस्त और आर्द्राको वेधता है ॥

वैश्वर्क्षगः खेचरः खगकारं पूर्वभाद्रभं ।
भकारं मालि जूकं पंउत्तरां शशिभं हरेत् ॥

उत्तराषाढपर प्राप्तहुआ ग्रह (ख] (ग) पूर्वां भाद्रपर और (भ) ८। ७। राशी (प) उत्तरा फालगुनी तथा मृगसिर को वेधता है ॥

अभिजित्स्थः खगो हन्ति ऋकारं
वारुणं पुनः । जं चापं अस्त्ररं कन्या
टकारं मग धातृभे ॥

अभिजितपर वैठा हुआ ग्रह (ऋ) और शत-भिषा (ज) ९ राशी (अं) कन्या (ट) पूर्वां फालगुनी तथा रोहिणी को वेधता है ॥

गोविन्दगः खमकरं जयां भद्रां तिथि
ग्रहः । सिंहं मकारं पैत्र्यर्क्षं धनिष्ठां
हन्ति कृत्तिकाम् ॥

श्रवणपर स्थिर ग्रह (ख) १० राशी जया ३। ८। १३ भद्रा २। ७। १२ और सिंह (म) तथा मघा धनिष्ठा और कृत्तिका को वेधता है ॥

वस्वर्क्षगः खगोहन्ति गकारं कुंभ
राशिकम् । रिक्तां नन्दां कुलीर ड्सार्पं
विष्णु ढ्दिदेव भम् ॥ २१ ॥

घनिष्ठापर ठहरा हुआ ग्रह (ग) ११ राशी ४।१ ॥ १४ रिक्ता और १ ॥ ६ । ११ नन्दा कर्कराशी (ड) श्लेषा श्रवण और विशाखा को वेधता है ॥

शततारर्क्षगः खेटो समीनं ओस्वरं युगं हं पुष्पं हन्ति ऋकारं अभिजित् स्वाति मगूगाम् ॥

शतभिषापर चलता हुआ ग्रह (स) १२ राशी (ओ) स्वर मिथुन राशी (ह) पुष्य और (ऋ) अभिजित् स्वाति को वेधता हैं ॥

पूर्वा भाद्रस्थितःखेटो दंमेषं वृष भं हरेत् । कमा दित्येगाऽक्षरं खं उत्तराषाढ चित्र भे ॥

पूर्वा भाद्रपद पर स्थित ग्रह (द) १॥ २ राशी और क पुनर्वसु [ग] [ख] अक्षर तथा उत्तराषाढ और चित्राको वेधता है ॥

उत्तरा भाद्रगःखेटो चं लं बं आर्द्रमं क्रमात् । सकारं ऐस्वरं हन्ति जेतो यर्क्ष रविपुरः ॥

उत्तरा भाद्रपद पर आया हुआ ग्रह [च] [लं]

(प) और आर्द्रा तथा (स) (ए) स्वर (ज) और पूर्वाषाढ आगे हस्त को वेधता है ॥

रेवत्यां संस्थितःखेटो दं कुंभनक्र रा
शिकम् । भनिर्ऋति लं अकारं चन्द्रर्क्षं
उत्तरां हरेत् ॥

रेवती पर संस्थित ग्रह (द) ११ ॥ १० ॥ राशी (म) मूल और (ल) (अ) मृगशिर तथा उत्तरा फाल्गुनी को वेधता है ॥

आश्विनीं संस्थितः खेटः चमीनं अः
स्वरं धनुः याऽक्षरं ज्येष्ठ भं हंति उ-
कारं विध भं भगम् ॥

आश्विनी पर स्थित ग्रह (च) १२ राशी (अः) तथा ९ राशी और (य) अक्षर ज्येष्ठा (उ) कार रोहिणी और पूर्वा फालगुनी को वेधता है ॥

भरण्यां संस्थितः खेटो लकारं मेष
राशिकं । रिक्तांजयां आलिं हन्यात् न

मंत्रं अग्नि पैतृभे ॥

भरणी पर स्थितग्रह (ल) १ राशी ४ ॥ ॥ ९ ॥१४ रिक्ता ३ ॥ ८ १३ जया तथा ८ राशी (न) अनुराधा और कृत्तिका तथा मघा को वेधता है ॥ इति ॥

दिग्वेधः

रौद्रादिमध्यम भ चतुष्केवेधतो वेधमा
दिशेत् क्रमशः घङ्छां । प ण ठां ध फ
ढां थ झ ञा मिति सर्वतो भद्रे ॥

अब पूर्व आदि अक्षरों का क्रम स्पष्टकर दिखाते हैं ! आर्द्रा को आदि ले बीच के चार नक्षत्रों पर अर्थात् आर्द्रा १ हस्त २ पूर्वाषाढ ३ उत्तराभाद्रपद ४ इनमें से यदि आर्द्रा पर जो ग्रह होय वह (क) (घ) (ङ) (छ) इन चारों अक्षरों को वेधता है। यदि हस्त मा कोई ग्रह हो वह (प) (ष) (ण) (ठ) को दक्षिण में वेधता है। पूर्वाषाढ पर स्थित ग्रह (भ) (ध) (फ) (ढ) को वेधता है। ऐसे ही उत्तरा भाद्र पर जो ग्रह हो वह (द) (थ) (झ) (ञ) इन चारों को उत्तर में वेधता है॥

कोणवेधः

प्रथमाग्नि भस्थ खेटो विध्येत्कोण
स्थिता नच श्चतुरः । तिथिमपि पूर्णान
शुभः क्रूरजवेधः शुभ शुभजः ॥

प्रथम नक्षत्र भरणी अग्नि नक्षत्र कृतिका इन दोनों पर कोई ग्रह बैठा होय तो ईशान कोणमें स्थित

चार स्वरों को बेधता है। जैसे [अ) (उ)(लृ] [ओ) और ५ । १० । १५ । ३० पूर्णा तिथियों को बेधता है। ऐसेही श्लेषा और मघापर स्थित ग्रह अग्नि कोणके चार (आ) (उ) (लृ) [ओ) और पूर्णाको बेधता है। विशाखा तथा अनुराधा पर जोकोई ग्रहहो वह [इ] (ऋ) (ए) (अं) इन स्वरों को और पूर्णा तिथियों को बेधताहै। यदि श्रवण वा धनिष्ठा पर कोई ग्रह होतो [इ] (ऋ) (ऐ) (अः) इन स्वरों को वायव्य कोणमें बेधता है कोणस्थ ग्रह पूर्णाको बेधता है। कोण बेधमें वक्र शीघ्रादि ग्रहोंका क्रम कुछ अपेक्षित नहीं है क्रूर ग्रहोंका बेध शुभ नहीं है। शुभ ग्रहोंका बेधशुभ है ॥

वक्रीदक्षं कणंगत्याथवामं शीघ्रं वि-ध्येदीक्षते ऽग्रेसमस्तु। निच्चयवक्री राहु-केतू रवीन्दू नित्यं शीघ्रौ हग्व्यधौ तुल्य रूपौ ॥

विशेषतः वक्री ग्रह तिरछी गतिसे दाहिनी ओर वेधताहै। और शीघ्र बांई ओर बेधता है। समग्रह सामने वेधताहै। राहु केतु नित्य वक्री रहतेहैं। और सूर्य चन्द्रमा सदा शीघ्र गतिवाले हैं। इनचारों ग्रहों

की दृष्टि और वेध बराबर हैं। येदृष्टि और बेध में समान है।

॥ उदाहरण ॥

जैसे रोहणी पर वक्री ग्रह बैठा होयतो दाहिनी और अश्विनी को बेधेगा। यदि रोहिणी पर शीघ्र ग्रह बैठेगा तो स्वातिको वेधेगा। यदि रोहिणी पर समग्रह होगातो अभिजित्को विधेगा। भौमादिपांचों का विचार भी ऐसेही जानो। इनमें राहुकेतु रवि चन्द्रमा सदा दृष्टि और बेध में तुल्य हैं।

उद्वेगार्थ विनाशरोगमृतिदा विध्यंत
एकादयो वर्णैहीनिरुडौ अमोऽचितुरुजो
विद्धेतियैा भीर पिराशौविम्रतातिश्च पंच
सुमृतिर्विध्यतज्ञ इज्यः सितः प्रज्ञासर्वं
सुखंरातिं विदधतेवक्रा अतीष्टाइमे ॥

❁ अथ फलम् ❁

यदि एक से ले चार तक क्रूर ग्रह बेधते हों तो यह फल होताहै। एक क्रूर ग्रहके बेधसे उद्वेग नाम मनका उच्चाटन। दो क्रूरोंके बेधसे (अर्थ नाश) कोऽर्थ धननाश। तीन क्रूरों के बेधसे रोग। चारके बेधसे मृत्युहो।

यदि शुभग्रहों का बेधहो तो यथा संख्या । मन स्थिर १ द्रव्यागम २ रोगरहित ३ आयुबुद्धि ४ हो ॥ यदि नामका प्रथमाक्षर पापग्रह से विद्ध होतो हानिहो ॥ नक्षत्र वेधसे चित्त भ्रम, और परदेश भ्रमणहो । और नामके प्रथमाक्षर में जो स्वरहो वह वा वर्ण स्वरका जो स्वरहो वह क्रूरविद्ध होतो रोग होय ॥ यदिजन्म तिथि क्रूरविद्ध होतो राजा अग्नि ब्राह्मण चोर शस्त्र शत्रु आदिकों से भयहो यदि राशि क्रूरविद्ध होतो अनेक विघ्नहों । यदि अक्षर १ नक्षत्र २ स्वर ३ तिथि राशियें पांचों क्रूर विद्धहों तो मृत्यु होय ॥ अब शुभ ग्रहोंके बेधका फल कहते हैं (ज्ञ) नाम बुधका बेध होतो (प्रज्ञा) नाम बुद्धि बढै । (ईज्य) कोर्थ बृहस्पति के बेधसें सर्व सुखहों (सित) शुक्रका बेधहोतो प्रीति बढै । यदि चेत् बुधबृहस्पति शुक्र ये तीनों वक्री होकर बेधते हों तो बहुतही शुभफलहो । और क्रूरग्रह वक्री होके बेधेंतो अत्यंत दुष्ट फलहो ॥

क्रूरा वक्रे ऽतीव दुष्टा रविश्च यद्भासौ सादित्स दिश्यास्तेमाति। प्राच्यामीशा

सास्थिताचः क्रमोयम् सर्वशासुज्ञायतां बुद्धिमद्भिः ॥

क्रूर नाम पाप ग्रह वक्री होय तो बहुत ही दुष्ट

फल के दाता हैं । चपुनः रवि नाम सूरज जिस दिशा की राशियों पर हो वह दिशा नक्षत्र अक्षर स्वर राशि तिथि वार सहित अस्त होजाती हैं ॥ जैसे ॥ वृषादि तीन राशियों पर सूर्य होयं तो पूर्व दिशा में स्थित नक्षत्रादिक सब अस्त होजाते हैं । ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम उत्तर का क्रमहै । और ईशान दिशा में स्थित जो स्वर हैं वे पूर्व में गिनने चाहिये ॥ ऐसे ही आग्नि दिशा के स्वर दक्षिण के साथ नैऋत के पश्चिम के साथ वायव्य के उत्तर में जानने चाहिये ।

अस्ताशास्थाऽजाद्यैः क्रूर व्यधवत्
फलं वाच्यम् । उदिता शास्थैः सौम्य
व्यधइव फल मादिशेच्छ्रेष्टम् ।

अस्त हुई दिशा में स्थित जो स्वरादि अर्थात् स्वर १ वर्ण २ नक्षत्र ३ तिथि ४ वार ५ राशि ६ उनसे क्रूर ग्रहों का जो वेध हो वैसा ही फल कहना और उदित जो दिशा उस में जो स्वरादिक (को अर्थ) स्वर वर्ण नक्षत्र तिथि बार राशि (सौम्य व्यघइव) कोर्थ शुभग्रह के वेधकी नाईं शुभ फल कहना । यहां वारका फल नहीं कहा है सो तिथि के फलकी नाईं जानना योग्य है ।

ब्यवहार राजसवो संग्रामधाम मंत्रेषु ।
ज्ञातेपि जन्मराशौ फलमुन्नयंतुनाम
राशिवशात् ॥

नरपति में कहाहै । नक्षत्र अस्त होय तो रोग, वर्ण अस्त होयतो हानि स्वर अस्त होयतो शोक, राशि अस्त होय तो विघ्न. तिथि अस्त होय तो भयहोय। यदि पांचों अस्त हों तो निश्चय मृत्युहोय ॥ नक्षत्र उदित होयतो पुष्टिहोय। वर्णका उदय होयतो लाभ होय । स्वर के उदय में सुखहो । राशिका उदय होयतो जीतहो तिथिका उदय होनेसे तेज वृद्धि हो । यदि। पांचों का उदय होयतो पद — औहदा मिलै ॥ इह — इस सर्वतो भद्र चक्र में जन्म का नक्षत्र पापग्रह से विद्धहो तो हानि रोग कलह होय। और दशम नक्षत्र पाप विद्धहो तो मित्रादिका से विरोध होय। सोलवां नक्षत्र पाप विद्धहोतो द्रव्य हानिहोय ॥ और अठारवां ऋक्षभी पापविद्ध होतो द्रव्यकी हानि होय । और पच्चीसवां उडुड पापविद्धहो तो सुखकी हानिहोय ॥ अब राजाके अर्थ फल कहते हैं । राजा के देशका नाम नक्षत्र तथा जाति, वा अभिषेक का नक्षत्र (क्षुण्ण) नाम पापविद्ध होयतो वही वही भयहोय । यथा देश का नाम नक्षत्र पापविद्ध होय तो देशका भयहो । और

आतिका (भ) पापविद्ध होयतो जातिका भयराजा को होय जिस नक्षत्रमें राज्याभिषेक हुआहो वह पाप विद्ध होतो राज्य हानि होय ॥ जन्मको नक्षत्र कर्म १० । १६ । १८ । २३ । २५ । ये छः नक्षत्र सब मनुष्यों के लिये विचारने । और जाति, देश, अभिषेकके मिलाके राजाके लिये नौ नक्षत्रों से विचार करना ॥ व्यवहार १ राजसेवा २ संग्राम ३ स्थान ४ मंत्र साधन में । जन्मराशी जानते भी होतोभी नमराशिसे फल कहना ॥ शुभम्

॥ इति सर्वतो भद्रदीपः समाप्तः ॥

सम्पूर्णम्

उक्तं च नरपतौ ।

नक्षत्रेऽस्तेरुजोवर्णे हानिः शोकः स्वरे ऽस्तगे राशौविघ्नंतिथौभीतिः पंचास्ते मरणं ध्रुवम् ॥ नक्षत्रेभ्युदितेपुष्टि र्वर्णे- लाभः स्वरेसुखंराशौ जय स्तिथौतेजः । पदाप्तिः पंचकोदये ॥

हानिर्रुक कलहोपि पीडित इहस्या ज्जन्म भेस्यान्नये १० कर्म्माऽसिद्धिरथो- भिदाचय १६ मिते द्रव्य क्षयः स्याज्जये १८ गोरे २३ देहरुजः शेर २५ सुख हती राज्ञोऽथदेशोडुनिक्षुण्णे जात्याभि षेकयो रपि भयो स्तत्तद्भयं निर्दिशेत ॥

❀ नरपतौ ❀

१	१०	१६	१८	२३
जन्मभं	कर्म्म	साधानं	बिनाशं	सामुदा

२५

यकम् । संघातिक मिदं धिष्णं षट्कं सार्वं जनायकं, जातिदेशाभिषकर्क्षं नव- धिष्णानिभूपतेः । अतो राज्ञअर्थं नव- चिन्तनीयम् ।

प्रश्न कुतूहल से प्रश्न कहने तथा फल बताने की रीति

प्रश्न करने वाले महात्मा को यह चाहिये कि एक सलेट और कलम पास रख ले, पूछने वाला जो कोई आवै उस के मुख से जो वाक्य निकले उस को शुद्ध भाषा में तत्काल लिखले। प्रश्न कर्त्ताके वाक्य में जो गण हों उन से ही शुभाऽशुभ फल पुस्तकोक्त कहै॥ अथवा पूछने वाला शरीर पर जहां हाथ रख कर बूझे उस से प्रश्न जाने. विराट् चक्रमें सर्व अंगों के गण लिखे हैं। उपरोक्त रीतिसे फलित जैसा निकले वैसा कहै।

* सर्वतो भद्र दीप चक्रम् *

च ङ घ

	अ	कृ०	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	आ
	भ	ष	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
	अ	लृ	लृ	२	३	४	ऌ	म	म
	रे	च	१	ओ	१।६ ११ २० मं	औ	५	ट	पू
नक्षत्र	उ	द	१२	४।९ १४ गु	१५। १०।५ श	२।७ २१ बु० चं	६	प	उ
	प	स	११	अः	३।८ १३ बु	अं	७	र	चि
	श	ग	ए	१०	९	८	ए	त	स्वा
	ध	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
	ई	अ	ऽभि	उ	पू	मू	ज्ये	ऽनु	इ

पचड

ध फ ढ

बहार दरवेश (बाग बहार)

उर्दू भाषा से हिन्दी में अनुवादित. इसमें चार योगियों के देशाटन तथा उनपर जो जो मुसीबतें पडी उन सबका वर्णन बडी ही मनोहर और मन बहलाने वाली कहानी के रूपमें वर्णित है मू० ॥-)

हातिमताई

इसमें यूनान के राजा हातिम जैसे परोपकारी और उदार बादशाह ने मुनीरशामी नामक शाहजादे के कारण जो हुस्नवानू पर मोहित था सात बडी बडी यात्राऐं की थी उनका वर्णनहै की० ॥-)

सिंहासन बत्तीसी

इसमें राजा भोजसे ३२ पुतलियों ने राजा विक्रमादित्य का वर्णनहै कहानी रूपसे बडी ही रोचक भाषा में वर्णन कियाहै की० ।≈)

बैताल पच्चीसी ।

इसमें बैताल वीरकी राजा विक्रमादित्यसे कही हुई पचीस मनोहर कहानियांहै की० ।) आना

गुलवकावली

इसमें ताजुलमलूक को देश निकाला तथा उसका गुल वकावली पर मोहित होना और बकावली का फूल लाकर अपने अंधे पिता का अंधापन दूर करने का हाल वर्णितहै. की० ।) आ.

मोहिनी चरित्र ।

जानआलम शाहजादे का एक बोलता हुआ तोता खरीदना और उसके कहने में आकर जरानेगार देशकी शाहजादी जानआलम पर मोहित होना और बडी२ कठिनाइयों से उसके साथ विवाह होनेका वर्णनहै. की० ।=)

किस्सा सारंगा बडा ।

इसमें रानी सालिगा और सदावृक्षकी प्रेम कथा तथा उनके अनेक जन्मका हाल बडाही मनोहरहै. की० ।≈)

शुक बहत्तरी ।

इसमें शुक और प्रभावती के सम्वाद में ७२ कहानियां अति मनोहर भाषा लिखीहै. कीमत ।=) आना

मिलने का पता—बंबई भूषण प्रेस मथुरा।

नपुंसक संजीवन।

भाषाटीका सहित प्रथम भाग हस्तमैथुन आदि दुश्चरित्रोंसे खोई हुई शक्ति को बढाने वालीहै कीमत ।≈) आने। दूसरा भाग ।=)

अमृत सागर

यह वैद्यक ग्रंथोंमें सर्वोपरि विराजमानहै इसमें सभी बडे २ ग्रंथों का सार रोगोंकी पहिचान आदि सब वैद्यक इसीमेंहै जिस रोगकी दवा कहीं नहीं मिलतीहै वह इसमें देखकर सफलता प्राप्त करिये। की० २॥) रु०

केशकल्पद्रुम।

इस पुस्तकमें बालोंको काला लाल हरा करने के १०० नुसखे बहुतसी अंग्रेजी हिन्दी डाक्टरी पुस्तकोंसे दिये गयेहैं मू० ।)

शालहोत्र बडा

सचित्र इसमें घोडोंकी पहिचान रोगोंके निदान और इनके इलाजों का पूरा वर्णनहै की० ॥≈)

करावादीन शिफाई।

इस परमोपयोगी ग्रंथके रचयिता प्रसिद्ध हकीम मुहम्मदउल हुसेनी शिफाई साहब थे, जिन्होंने इस ग्रंथ में अपने जीवन भर के और अपने पिता के अनुभव किये हुए प्रयोग फारसी भाषामें लिखे थे उसीका यह भाषानुवादहै; इसमें अनेक प्रकार के अनोशदारू. इत्रीफल. अयारजात. आयरन, इनकियाब. शायोपा ज़ियाफ़. तेज़ाब. ज़वारिश. हवूब. गोलियां. हलुआ. हरीरा. खिज़ाब, रोगन, सनूत. सफूफ़. शरवत. ज़माद. तिला. अर्क़, सुरमे. लखलखे माउल. लइम. मुरब्बे. मरहम. माजून. इत्यादि के नुसखेहैं इस पुस्तक को पास रखने से रुपयों के नुसखे पैसों में बन सकतेहैं ३०० पृष्ठके उत्तम मोटे कागज़ पर छपी पुस्तकका मूल्य १॥)

दत्तात्रेय तन्त्र।

भाषाटीका सहित, इसमें मारण, वशीकरणादि २४ प्रकारके दुर्घट कार्यों के सम्पादन की विधिहै कीमत ।≈) आने

स्त्री जातक भा० टी०

यह स्त्रियोंके ग्रहादि देखने के लिये परमोपयोगीहै।

कौतुकरत्न भाण्डागार।

अर्थात् वृहत् इन्द्रजाल इस पुस्तकमें पांच भागहैं, इसमें राशि विचार, यात्रामुहूर्त्त,दिक्शूल, चक्र आदि ज्योतिषकी बातें फिर लाल, काली, हरी, पीलीकाली पर लिखनेकी स्याही बनाना, बौसनी, जाफरमानी आदि सौ प्रकारके रंगोंके कपडे रंगना, गुंजाके सौकल्प नकली मोती, मूंगा आदि बनाना सोने चांदीकी कलई करना, वैद्यक सम्बन्धी छोटे २ चुटकले दिल्लगी और मन बहलानेकी बातें जैसे जमि पर आग लगाना, नींबूका उछलना, पानी में आग हवा में दिया न बुझना आदि अनेक जादूकी बातेंहैं, तीसरे भाग में अनेक प्रकारके मंत्र मोहनी वशीकरण, उच्चाटन आकर्षण इत्यादि सिद्ध करने की विधि सहित दिये गये हैं, चौथे भागमें सिद्ध तंत्र और पांचवे भागमें मैस्मेरिज्म अर्थात् आत्मविद्या है। प्रारम्भ में नवदुर्गाओं के चित्र कलकत्तेकी काली समेत दियेहैं। ६४० पृष्ठकी पुस्तक का १।) रुपयाहै

इन्द्रजाल चारों भाग।

इसमें अनेक प्रकार के यंत्र तंत्र तथा कौतूहल पैदा करने वाले बाजीगरीके खेलों का अपूर्व संग्रहहै, की० ।=) खेल बंगाला)॥ सच्चा जादूगर)।

श्रीरामायण नाटक।

आजकल लोगोंकी रुचि नाटकोंकी ओर विशेष रूपसे बढ रही है और रामकथा कोभी नाटक में देखना सुनना पसंद करतेहैं इसमें गजल, ठुमरी, छन्द, लावनी आदि नये ढंगकी भक्तिपूर्ण कविताएं हैं, राग रागनियों के प्रेमियों के लिये यह परम रुचिकर सिद्ध होगी, सद्गृहस्थों को अपनी सहधर्मिणीयों स्त्रियों, माताओं, बहिनों को भी इसकी एक २ प्रति खरीदवानी चाहिये। मूल्य केवल २) रुपया है।

प्रेम सागर सचित्र

यह पुस्तक हिन्दी के जन्मदाता श्रीलल्लूलाल जी की लिखी हुई बडी प्राचीन पुस्तकहै इसमें श्रीमद्भागवत दशमस्कंध के पूरे ९० अध्यायों का वर्णनहै इसमें श्रीकृष्णकी बाल लीला का वर्णनहै प्रत्येक अध्याय के ऊपर अत्यन्त मनोहारी चित्र दिये गयेहैं जिल्द बंधी पुस्तक का मू० १॥)

शीघ्रबोध—भाषाटीका सहित मोटे अक्षरोंमें छपी पुस्तकका मू० ।=)

मुहूर्त्त चिंतामणि भा० टी० मुहूर्त्त विषयका सर्वोत्तम ग्रंथहै की० ॥)